शत्रु का उपहार

ट्रुडी लुडविग

चित्र: क्रेग

"मैं असाधारण अतीत वाला, एक बहुत साधारण व्यक्ति हूं."

इस सच्ची और दिल को छूने वाली कहानी में, द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान नाजी यातना और मृत्यु शिविर में एक ज़िंदा बचने वाले आदमी, ऑल्टर वाईनर, युवा पाठकों को उस घटना के बारे में बताते हैं जब एक अनजाने व्यक्ति ने उनके प्रति बार-बार दयालुता दिखाने का नैतिक साहस किया और अपनी जान को जोखिम में डाला.

"क्यों, मैंने खुद से पूछा, क्यों वो अजनबी मेरे लिए एक बार नहीं, बल्कि 30 बार अपनी जान को जोखिम में डालने को तैयार हुआ?
मेरे लिए उसने वो क्यों किया?"

"शत्रु का उपहार" पुस्तक दिखाती है कि सामाजिक न्याय और दयालुता के काम, किसी के जीवन को कैसे बदल सकता है. माता-पिता और शिक्षक इस कहानी में एक मूल्यवान संसाधन पाएंगे जिससे बच्चे एक उपयुक्त तरीके से घृणा, रूढ़िवादिता और पूर्वाग्रह के खतरों को समझने में मदद मिलेगी.

शत्रु का उपहार

ट्रुडी लुडविग
चित्र: क्रेग

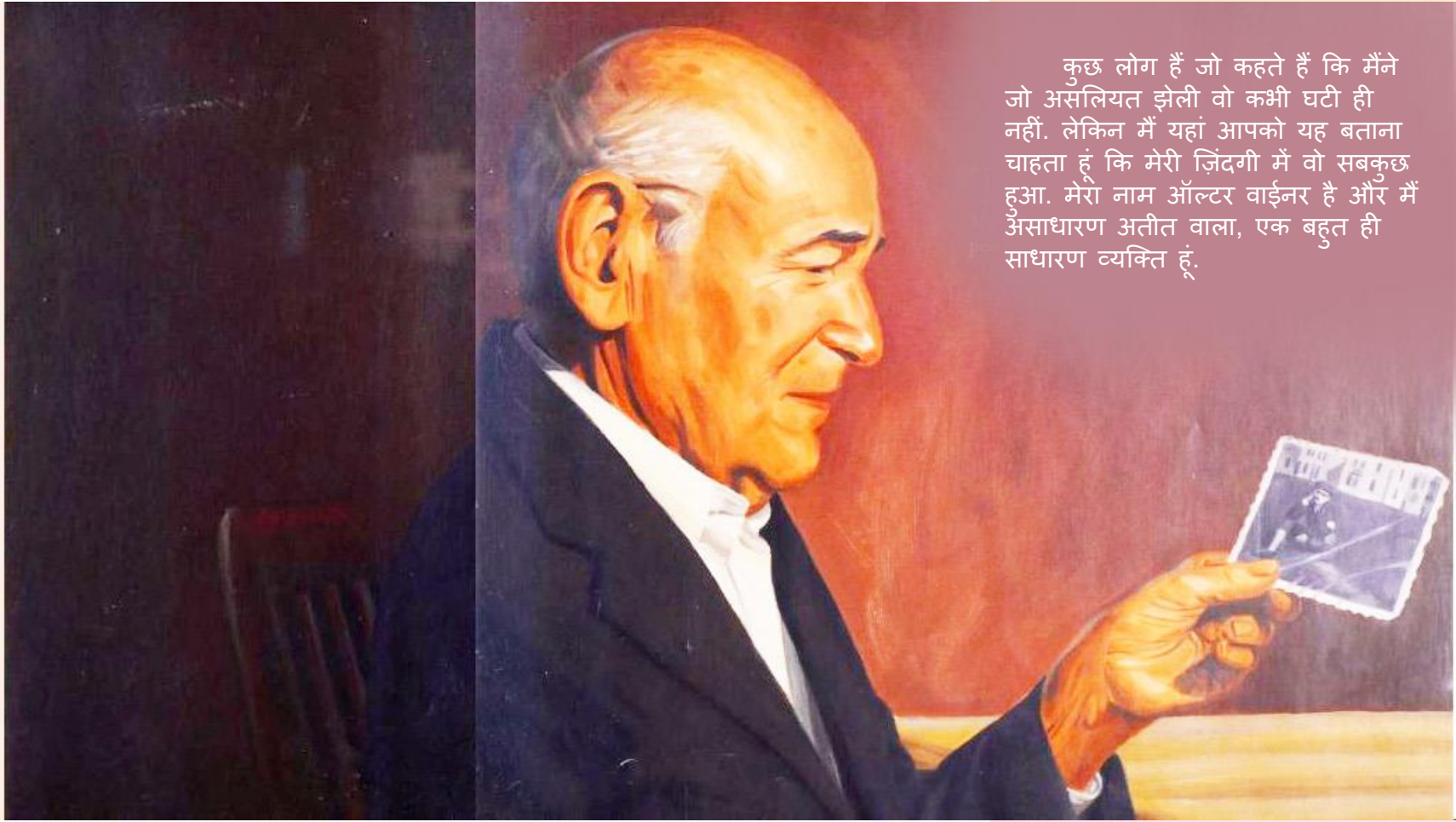

कुछ लोग हैं जो कहते हैं कि मैंने जो असलियत झेली वो कभी घटी ही नहीं. लेकिन मैं यहां आपको यह बताना चाहता हूं कि मेरी ज़िंदगी में वो सबकुछ हुआ. मेरा नाम ऑल्टर वाईनर है और मैं असाधारण अतीत वाला, एक बहुत ही साधारण व्यक्ति हूं.

बहुत साल पहले मैं भी तुम्हारी ही तरह छोटा था. मैं अपने परिवार के साथ पोलैंड के दक्षिण-पश्चिम कोने के एक छोटे से शहर क्रज़ानो में रहता था.

उस समय, हमारे घर में पाइप के ज़रिए पानी नहीं आता था. हमारे पास रेफ्रिजरेटर, सेल फोन, टीवी या कंप्यूटर नहीं थे. हमारे पास कार भी नहीं थी. हम ज्यादातर पैदल ही चलकर कहीं जाते थे.

हम एक बहुत सरल-सादा जीवन जीते थे. फिर भी, हमारा घर किताबों, भोजन, हँसी और प्रेम से भरा हुआ था.

हर शुक्रवार को पापा किसी एक गरीब छात्र या किसी बेघर व्यक्ति को, हमारे साथ सैबथ (यहूदी छुट्टी के दिन) का खाना साझा करने के लिए लाते थे. सूर्यास्त के समय, हम सैबथ के स्वागत में मोमबत्तियां जलाते थे और प्रार्थना करते थे. उसके बाद हम माँ द्वारा बनाया ताज़ा भोजन खाते थे. मैं ताज़ी, गरमा-गर्म डबलरोटी का एक टुकड़ा खाने का और इंतजार नहीं कर सकता था. उसका एक-एक कौर स्वर्गीय होता था!

माँ अद्भुत खाना बनाती थीं. वो रसोई में घंटों बिताती थीं और पापा, मेरे भाइयों शमूएल, हिर्श और मेरे लिए बेहद स्वादिष्ट भोजन बनाती थीं.

मेरी माँ बड़ी दरियादिल थीं. "ठंड से निपटने के दो तरीके होते हैं," वो अक्सर कहती थीं. "खुद को गर्म रखने के लिए या तो तुम फर कोट पहन सकते हो, या फिर आग जला सकते हो ताकि दूसरे भी गर्म रह सकें."

माँ ने सुनिश्चित किया कि हम अपने से कम भाग्यशाली लोगों को भोजन और आश्रय प्रदान करें - शांति के समय में भी और बाद में, युद्ध के दौरान भी.

सितंबर 1,1939 को जर्मन नाजी सैनिकों ने, अपने नेता एडोल्फ हिटलर के आदेश पर मेरे देश पोलैंड पर कब्ज़ा किया. पोलैंड की सेना इतनी मजबूत नहीं थी कि वो हमारी सीमाओं और लोगों की रक्षा कर सके. हजारों लोगों ने भागने की कोशिश की, जिसमें मेरा अपना परिवार भी शामिल था, पर हमारे पास जाने के लिए कोई जगह नहीं थी. हिटलर की सेना ने हमें चारों ओर से घेर लिया था.

मेरे पापा एक विचारशील और शांतिपूर्ण स्वभाव के व्यक्ति थे. पापा ने मुझे और मेरे भाइयों को नफरत को अस्वीकार करना सिखाया. दूसरी ओर हिटलर ने अपने लोगों को नफरत, गले लगाना सिखाई.

उनकी नफरत शब्दों से शुरू हुई थी. शुरू में वे आहत करने वाले शब्द फुसफुसाते थे, पर बाद में पड़ोसी और अजनबी दोनों पर वो चिल्लाते थे. उन शब्दों ने कई लोगों के दिलों और दिमागों में अपनी जड़ें जमा लीं और उनसे कई लोग बद-से-बदतर हो गए.

जब हिटलर सत्ता में आया, तो उसने अपनी सेना को, ऐसे लाखों लोगों की तलाशने, कैद करने और मारने का आदेश दिया, ऐसे बूढ़े और जवान लोगों को, जो हिटलर के लोगों से लोगों से अलग दिखते, सोचते और काम करते थे. हिटलर मतभेदों से नफरत करता था.

जर्मन सेना का कब्जा हमारे शहर में हर किसी के लिए कठिन था, लेकिन वो यहूदी लोगों के लिए सबसे कठिन था क्योंकि हम हिटलर की नफरत की सूची में सबसे ऊपर थे.

हमारी आजादी और अधिकार छीन लिए गए.

हमारे बच्चे स्कूल नहीं जा सकते थे.

हम अपने पूजा घरों में प्रार्थना नहीं कर सकते थे.

हम अपने पसंदीदा पार्कों या खेल के मैदानों में भी नहीं जा सकते थे.

कर्फ्यू ने हमें अपने ही घरों में कैदी बनने के लिए मजबूर किया.

इस नफरत के कारण कई अच्छे और सभ्य लोगों ने अपनी जान गंवाई - जिनमें मेरे अपने दोस्त और परिवार के कई सदस्य भी शामिल थे.

मैं 13 साल का था जब जर्मन सैनिकों ने मेरे शहर में मार्च किया और उन्होंने मेरे पापा को मार डाला.

मैं 14 साल का था, जब आधी रात को, वे हमारे घर में घुस गए और मेरे बड़े भाई शमूएल को ले गए.

मैं 15 साल का था जब नाज़ी मेरे लिए आए थे. मुझे माँ और अपने छोटे भाई हिर्श को गले लगाने का भी मौका नहीं मिला. वो उनसे मेरा आखरी मिलन था. उसके बाद मैंने उन्हें फिर कभी नहीं देखा.

मुझे और कई अन्य लोगों को, दयालुता, करुणा, सम्मान और गरिमा से दूर, किसी यातना शिविर में मालगाड़ी के डिब्बों में ट्रेन द्वारा मवेशियों की तरह ले जाया गया.

मुझे बार-बार बहुत भीड़-भाड़ वाली, गंदी परिस्थितियों वाले, एक जेल के लेबर कैंप से दूसरे जेल में भेजा गया. मुझे रोज़ाना लंबे घंटों तक काम करने के लिए मजबूर किया गया. गार्डों ने कैदियों के साथ क्रूर व्यवहार किया और कोई दया नहीं दिखाई. कैदियों को खाने के लिए कभी भी पर्याप्त भोजन नहीं मिलता था. मैं हमेशा भूखा रहता था. जब मुझे बहुत भूख लगती थी तो मैं माँ और उनके बनाए अद्भुत व्यंजनों के बारे में सोचता था. मैं घर पर बनाई डबलरोटी का सिर्फ एक छोटा सा टुकड़ा चखने के लिए कुछ भी करने को तैयार था.

इस तरह महीनों बीत गए. फिर वर्षों तक भोजन की कमी और पीड़ा से मेरा पेट खाली हो गया और मेरा दिल भारी हो गया.

अब मेरे पास सिर्फ एक-दो दिन और ज़िंदा रहने की ताकत और इच्छाशक्ति ही बची थी. तब मेरे साथ कुछ आश्चर्यजनक हुआ: मुझे एक अजनबी से कुछ उपहार मिले. और वो कोई साधारण अजनबी नहीं था. वो एक ऐसा अजनबी था जिसे मैं अपना दुश्मन समझता था.

बात उस समय की है जब मैं एक जर्मन फैक्ट्री में काम कर रहा था. कारखाने की दीवारों पर सभी जर्मन कर्मचारियों के लिए निम्न चेतावनियां लिखी थीं:

कैदियों की ओर मत देखो.

कैदियों से बात मत करो.

कैदियों को कुछ मत दो.

यदि किसी ने ऐसा किया तो उसकी ज़िंदगी बर्बाद हो जाएगी.

एक दिन, एक जर्मन कर्मचारी ने मुझ से आँख मिलाई. जब मेरा ध्यान उसकी ओर गया, तो उसने फर्श पर पड़े एक डिब्बे की और अपनी उंगली से इशारा किया. जिज्ञासापूर्वक, मैं उस स्थान पर तब गया जब मुझे कोई नहीं देख रहा था और मैंने उस डिब्बे को खोलकर देखा.

मुझे क्या मिला? वो सबसे बढ़िया उपहार था जिसका मैं सपना देखा सकता था ... ब्रेड और पनीर का एक सैंडविच! मुझे अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ! मैंने सैंडविच उठाया और इससे पहले कि कोई मुझे देखे, मैंने उसे खा लिया.

इससे भी अधिक आश्चर्य की बात यह थी कि उस जर्मन महिला ने मेरे लिए अगले 30 दिनों तक (जब तक मैंने वहां काम किया), हर दिन उसी डिब्बे के अंदर एक ब्रेड और पनीर का सैंडविच छोड़ा!

क्यों, मैंने खुद से पूछा; क्यों वो अजनबी मेरे लिए एक बार नहीं, बल्कि 30 बार, अपनी जान जोखिम में डालने को तैयार हुई? मैं ही क्यों? क्या उस महिला का मेरी उम्र का कोई बेटा था? शायद इसलिए उसे मुझ पर तरस आया? क्या वो एक धार्मिक व्यक्ति थी जो मानती थी कि असहायों की मदद करना उसका कर्तव्य और धर्म था?

आज तक मुझे, उसके खिलाने का कारण पता नहीं चला. मुझे नहीं पता कि उसने मुझे ऊर्जा दी और जीवित रहने की आशा दी. लेकिन उसके दयालुता के कृत्यों ने मुझे सोचने के लिए मज़बूर किया : मैं कैसे यकीन करूं कि सभी जर्मन मेरे दुश्मन थे जबकि इस जर्मन महिला ने मेरे लिए अपनी जान जोखिम में डाल दी थी? तब मैंने जीवन में अपना सबसे महत्वपूर्ण सबक सीखा: लोगों के किसी भी समूह में, हमेशा कुछ दयालु और कुछ क्रूर लोग होते हैं. आप जीवन में जिन लोगों से मिलते हैं और वे आपके साथ कैसा व्यवहार करते हैं, यह उससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण होता है कि वे किस देश, नस्ल, जाति आदि के हैं.

मई 1945 में, रूसी सेना हमारे शिविर में पहुंची, और उसने हमें बताया कि युद्ध समाप्त हो गया था और जर्मनी युद्ध हार गया था, और हम अब अंत में मुक्त हो गए थे! मैंने अपनी बहादुर जर्मन हीरोइन से मिलने और पता लगाने की बहुत कोशिश की, लेकिन मैं उसे नहीं ढूढ सका. फिर भी, एक दिन ऐसा नहीं बीता जब मैंने उस अद्भुत महिला के बारे में सोचा न हो. हर दिन मैंने उस महिला के साहस और दया के लिए उसे धन्यवाद दिया.

युद्ध ख़त्म हुए अब कई साल बीत चुके हैं. मैं अब बहुत बूढ़ा हो गया हूं, लेकिन मेरे अतीत की यादें अभी भी तरोताज़ा हैं. प्रत्येक शुक्रवार को सूर्यास्त के समय, मैं सैबथ का स्वागत मोमबत्तियों को जलाकर और प्रार्थना के साथ करता हूं, उसके बाद शुभ भोजन को पूजता हूं. अब, जब मैं डबलरोटी को काटता हूं, तो मुझे सिर्फ स्वर्ग का स्वाद नहीं आता है, मुझे आजादी का स्वाद भी आता है.

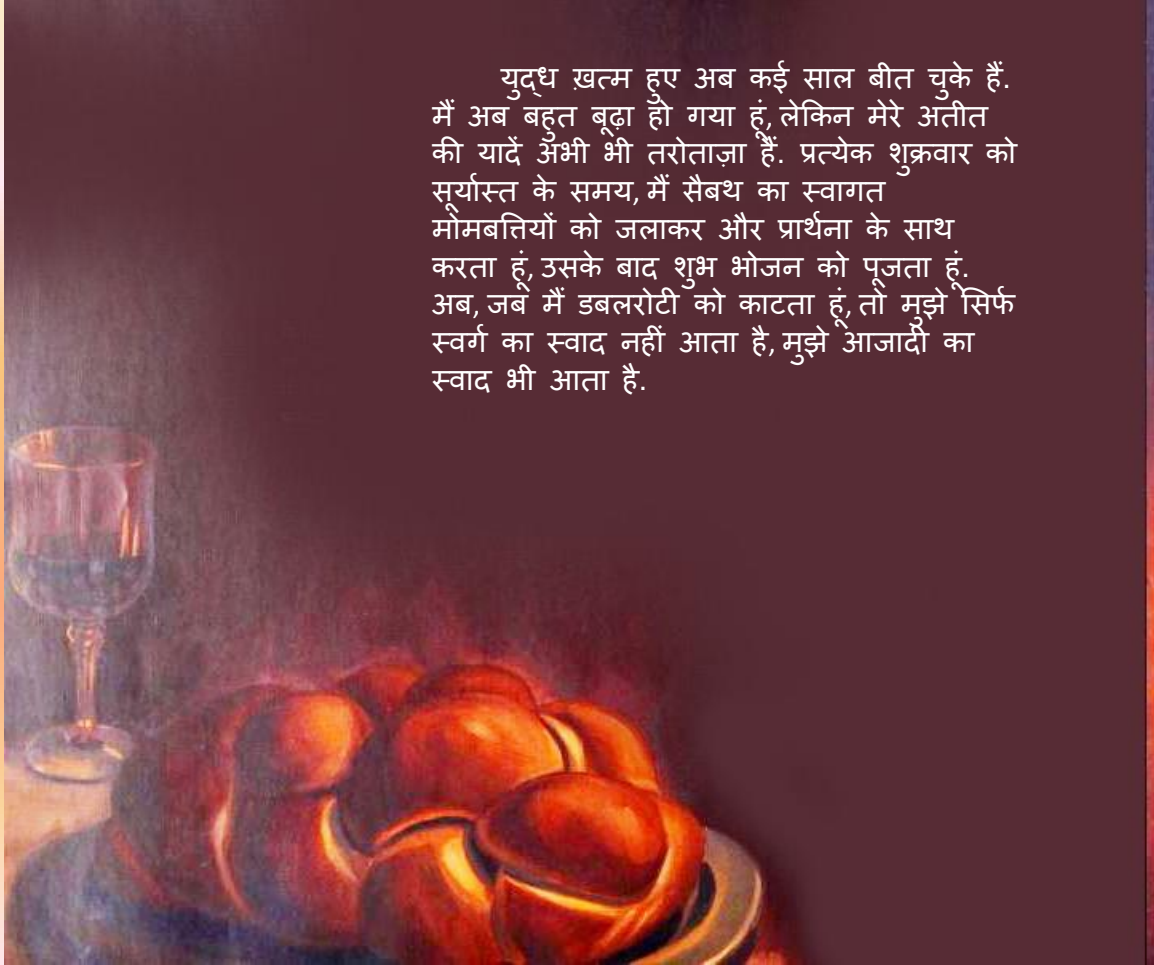

अंत के शब्द

एक पुरानी कहावत है कि होशियार लोग अपने स्वयं के अनुभवों से सीखते हैं, लेकिन एक बुद्धिमान व्यक्ति दूसरों के अनुभवों से भी सीखता है. बहुत से लोग जिन्होंने गिरजाघरों, आराधनालयों और स्कूलों में मेरी प्रस्तुतियों को सुना है, साथ ही मेरी आत्मकथा भी पढ़ी है, उन्होंने व्यक्तिगत रूप से मुझे बताया है कि मेरे जीवन की कहानी का उनके जीवन पर एक सकारात्मक प्रभाव पड़ा है. "आपकी कहानी को सभी लोगों बड़ों और युवा दोनों को, फिर से सुनाना चाहिए," उन्होंने मुझ से कहा: "वर्तमान और आने वाली पीढ़ियों को प्रलय (होलोकॉस्ट) को याद रखना चाहिए, उससे सीखना चाहिए और दुबार नरसंहार न हो, उसे रोकने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए."

नफरत की कोई सीमा नहीं होती

द्वितीय विश्व युद्ध में, हर यहूदी एक शिकार था, लेकिन हिटलर की हिट-लिस्ट में यहूदी, पुजारी, मौलवी, रोमा, एफ्रो-जर्मन, रूसी, चेक, पोल, सर्ब, राजनीतिक असंतुष्टों के अलावा विकलांग लोग, भी थे. क्योंकि हिटलर का मानना था कि जर्मन लोग एक श्रेष्ठ मानव जाति के सदस्य थे, जिन्हें उसने "आर्यन" कहा, और उसने सभी गैर-आर्यों को अमानवीय माना. विशेष रूप से उसने यहूदियों को नष्ट करने के लिए सब कुछ किया. कई जर्मन लोगों ने अपने नेता से असहमत होने पर दंडित किए जाने के डर से, हिटलर की जातिवादी विचारधारा के आगे घुटने टेक दिए.

"शत्रु का उपहार" पुस्तक के पाठक वे बच्चे होंगे जिन्होंने शायद कभी अनुभव नहीं किया हो कि मैंने एक युवा के रूप में, क्या झेला था. उदाहरण के लिए, वाल्डनबर्ग यातना शिविर में, नाजियों ने मेरा नाम छीन लिया और मुझे सिर्फ एक नंबर दे दिया. मुझे ठंड के खराब मौसम से बचाने के लिए गर्म कपड़े, मोजे और जूतों के बजाय, मुझे केवल एक कपड़े की वर्दी और लकड़ी की खड़ाऊं मिली. मेरा बिस्तर - बिना गद्दे, तकिये या चादर का लकड़ी का एक संकरा तख्ता था - जो मेरी मेज और कुर्सी के रूप में भी काम करता था. मेरे पास कोई कप या गिलास नहीं था. मुझे जो थोड़ा सा खाना मिलता था, उसके लिए एकमात्र बर्तन एक उथला खाने का कटोरा था. मेरे पास कोई तौलिया, कंघी या टूथ ब्रश नहीं था. मैं अपना चेहरा नहीं देख सकता था क्योंकि मेरे पास कोई दर्पण नहीं था. उसके बजाय, मेरी आंखें सब ओर मानव पीड़ा को देख सकती थीं.

अपनी किशोरावस्था के दौरान, मैं अपनी ज़िंदगी नहीं जी पाया, मैं सिर्फ जीवित रहा. मुझे केवल मरने का अधिकार था. पांच साल से अधिक समय तक, मुझ पर प्रतिदिन अत्याचार हुए - मैंने जो किया था उसके लिए नहीं, बल्कि इसलिए क्योंकि मैं एक यहूदी था.

मुझे आशा है कि "शत्रु का उपहार" युवा पाठकों को यह समझने में मदद करेगी कि दुष्ट और भले लोग हर समूह और समुदाय में पाए जा सकते हैं. किसी भी समुदाय की स्टीरियोटाइपिंग करना अन्यायपूर्ण बात है. कौन जानता है कि हमारी सभ्यता कितनी आगे बढ़ती यदि इतने लोगों को मारने के बजाय, उन्हें फलने-फूलने दिया जाता? आज के बच्चों के लिए भी मेरी प्रबल इच्छा है कि वे इस दुनिया को सभी के लिए एक बेहतर, अधिक देखभाल करने वाली जगह बनाने के अपने प्रयासों को हमेशा ज़ारी रखें.

ऑल्टर वाईनर, *फ्रॉम ए नेम टू ए नंबर - एक होलोकॉस्ट सर्वाइवर* की आत्मकथा के लेखक

युद्ध में प्रलय और एक दुनिया

होलोकॉस्ट द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान लगभग साठ लाख यूरोपीय यहूदियों के उत्पीड़न और सामूहिक हत्याओं का वर्णन करने वाला शब्द है. जब 1930 के दशक की शुरुआत में नाजी पार्टी के नेता एडॉल्फ हिटलर जर्मनी में सत्ता में आए, तो उन्होंने और उनके समर्थकों ने मुख्य रूप से यहूदी लोगों को उनके देश की समस्याओं के लिए दोषी ठहराया और उन्हें "निम्न" स्तर का माना. अपने अनुयायियों को आश्वस्त करके कि यहूदी लोग जर्मन राष्ट्र और जाति के लिए खतरा थे, हिटलर ने लाखों निर्दोष पुरुषों, महिलाओं और बच्चों के खिलाफ अत्याचार का मार्ग प्रशस्त किया.

1939 से 1945 तक चले इस युद्ध में, केवल यूरोपीय यहूदी ही नहीं थे जिन्होंने हिटलर और उसके सहयोगियों के प्रभुत्व के प्रयासों का सामना किया, जिसमें कई राष्ट्र भी शामिल थे, जिसके परिणामस्वरूप दुनिया भर में 5 करोड़ से अधिक लोगों की जानें चली गईं. पूरे यूरोप, उत्तरी अफ्रीका, एशिया, अटलांटिक और प्रशांत महासागरों के साथ-साथ भूमध्य सागर में फैली लड़ाई के साथ, द्वितीय विश्व युद्ध को, मानव जाति के इतिहास में सबसे व्यापक, विनाशकारी युद्ध माना जाता है.